पाठ-14

सहन शीलता

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

आइए सीखें

■ कविता का सस्वर पाठ ■ मानवीय गुण ■ अनुस्वार व अनुनासिक शब्द ■ पर्यायवाची और विलोम शब्द ■ प्रत्यय।

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल
सबका लिया सहारा।
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो, कहाँ, कब हारा?

क्षमाशील हो रिपु समक्ष,
तुम हुए विनत जितना ही।
दुष्ट कौरवों ने तुमको,
कायर समझा उतना ही।

क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषरहित, विनीत, सरल हो।

तीन दिवस तक पथ माँगते,
रघुपति सिंधु किनारे।
बैठे पढ़ते रहे छंद,
अनुनय के प्यारे-प्यारे।

शिक्षण संकेत

▸ कविता का छात्रों से शुद्ध वाचन करवाएँ ▸ कविता में आए कठिन शब्दों का अर्थ बताते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग करवाएँ ▸ अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों से परिचित कराएँ ▸ छात्रों को नैतिक गुणों की जानकारी दें।

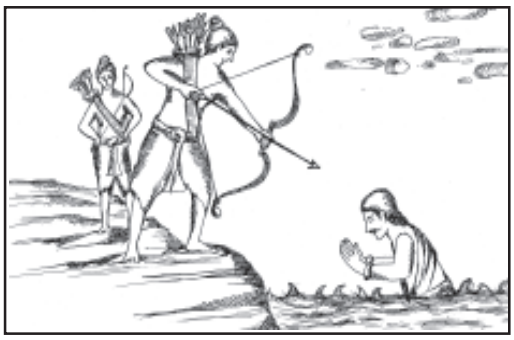

उत्तर में जब एक नाद भी,
उठा नहीं सागर से।
उठी अधीर धधक पौरुष की,
आग राम के शर से।

सिंधु देह धर 'त्राहि-त्राहि'
करता आ गिरा शरण में।
चरण पूज, दासता ग्रहण की,
बँधा मूढ़ बंधन में।

सच पूछो, तो शर में ही,
बसती है दीप्ति विनय की।
संधि-वचन संपूज्य उसी का,
जिसमें शक्ति विजय की।

सहनशीलता, क्षमा, दया को,
तभी पूजता जग है।
बल का दर्प चमकता उसके
पीछे जब जगमग है।

शब्दार्थ

रिपु=शत्रु। **विनत**=विनम्र। **अधीर**=व्याकुल, धैर्य का अभाव। **गरल**=विष। **नाद**=आवाज़। **देह**=शरीर। **दीप्ति**=चमक। **दर्प**=घमंड। **मनोबल**=मन की शक्ति। **सुयोधन**=दुर्योधन का वास्तविक नाम। **समक्ष**=सामने। **भुजंग**=काला नाग। **पथ**=मार्ग। **अनुनय**=विनती। **शर**=बाण। **धर**=धारण करना। **संपूज्य**=पूजनीय। **जग**=संसार।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**
   - दीप्ति – व्याघ्र
   - सहन – विनय
   - नर – हीन
   - दंत – शीलता

(ख) दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

- नर व्याघ्र..... को कहा गया है। (युधिष्ठर/दुर्योधन)
- रामचन्द्र सिंधु के किनारे..... तक पथ माँगते रहे। (तीन दिवस/पाँच दिवस)
- उठी अधीर धधक पौरुष की आग राम के ..... से। (शर/बल)
- क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास..... हो। (अमिय/गरल)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) कौरवों ने कायर किसको समझा?

(ख) क्षमा किसे शोभती है?

(ग) सिंधु से रास्ता किसने माँगा?

(घ) इस कविता में 'सुयोधन' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

(ङ) किन गुणों को सारा जग पूजता है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) 'नर व्याघ्र' का प्रयोग कवि ने क्यों किया है?

(ख) सागर किसके चरणों में आ गिरा और क्यों?

(ग) 'क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(घ) 'सच पूछो तो, शर में ही बसती है दीप्ति विनय की' पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

(ङ) कवि इस कविता के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है?

भाषा की बात

4. शुद्ध उच्चारण कीजिए—

क्षमा, व्याघ्र, क्षमाशील, समक्ष, पौरुष, दीप्ति, संपूज्य

5. शुद्ध वर्तनी पर गोला लगाइए—

सहारा / साहरा / साहारा

शोभति / शोभीति / शोभती

वनीत / विनीत / वीनीत

दिपिती / दीप्ति / दीपती

6. 'सहनशील' शब्द में 'ता' प्रत्यय लगाकर 'सहनशीलता' शब्द बना है। इसी प्रकार के अन्य शब्द बनाइए—

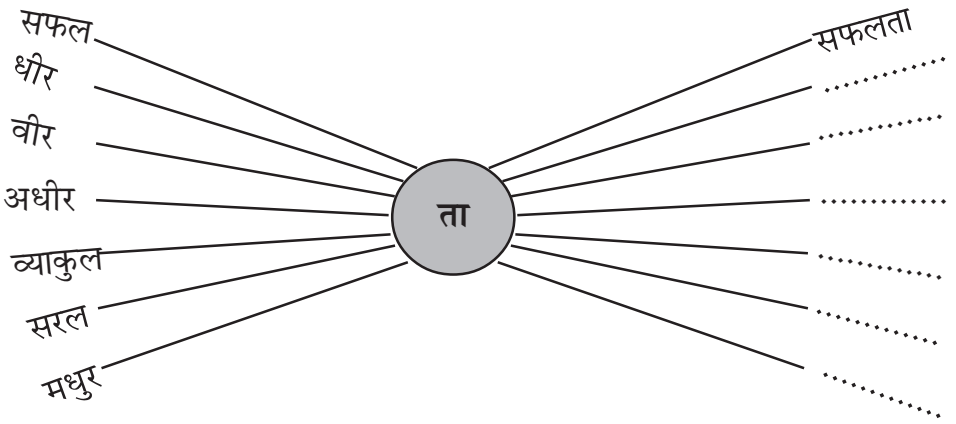

पढ़िए व समझिए

पाँच – पंच

हँस – हंस

उपर्युक्त शब्दों में 'पाँच' और 'हँस' शब्द में चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग हुआ है इन्हें अनुनासिक ध्वनि कहते हैं।

'पंच' और 'हंस' शब्द में बिन्दु ं का प्रयोग हुआ है इन्हें अनुस्वार कहते हैं।

7. निम्नलिखित शब्दों में से अनुस्वार एवं अनुनासिकता वाले शब्दों को छाँटिए—

कहाँ, भुजंग, दंतहीन, माँगना, सिंधु, बँधा, बंधन, संपूज्य, आँच, प्रशंसा, आँख, चाँद, कलाएँ, तुरंत

8. दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए—

भुजंग, गरल, दर्प, पथ, शर, नर

9. दिए गए शब्दों में से विलोम शब्दों की जोड़ी बनाइए—

सरल, दयालु, चरण, कठिन, दुष्ट, दासता, आज़ादी, शीश

अब करने की बारी

- कविता में आए मानवीय गुणों जैसे-क्षमा, दया, त्याग इत्यादि पर कोई प्रेरक प्रसंग कक्षा में सुनाइए।
- महाभारत की कथा संक्षिप्त में अपने अभिभावक अथवा शिक्षक से सुनिए।
- पांडव अज्ञातवास के दौरान कहाँ और किस-किस रूप में रहे खोजकर लिखिए।

❑❑